International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

बदलते वैश्विक परिवेश में अनुवाद का महत्व

धीरज
नेट, (जे.आर.एफ), हिन्दी
म.नं. 724, सैक्टर–23, सोनीपत, हरियाणा।

शोध आलेख सार– वर्तमान सन्दर्भ में यदि सभी देशों में एक ही भाषा उपलब्ध हो तो हम बात आसानी से समझ सकते हैं, परन्तु ऐसा संभव नहीं है। अतः विचारों के आदान–प्रदान के लिए विभिन्न भाषाओं में अनुवाद विद्या की अहम् भूमिका पहचानी जा सकती है। चूंकि अनुवाद दो भाषाओं की सामग्री होती है, जिसमें अनु और वाद दो शब्दों का मेल होता है। वास्तव में एक भाषा के एक रूप के कथ्य को दूसरे रूप में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है। आज के युग में विश्व को एक ग्लोबल गांव की संज्ञा दी जाती है। अतः अनुवाद विद्या का महत्व सर्वविदित है। प्रस्तुत शोध पत्र में अनुवाद विद्या के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

मूलशब्द– अनुवाद, वैश्वीकरण, भाषा सामग्री, कर्म, चेतना, जनमानस, ज्ञान–विज्ञान।

भूमिका – व्यक्ति की असली पहचान उसकी वाणी से होती है। व्यक्ति वाणी के द्वारा अपने सुख–दुःख की बात दूसरों को बता सकता है और वाणी का माध्यम है –भाषा।

आचार्य रामचन्द्र वर्मा के शब्दों में –

> ''भाषा की शक्ति अपरिमित व अमोघ है। अच्छी भाषा में जादू
> का असर, संगीत का माधुर्य और तलवार की शक्ति होती है।''

अगर विश्व के समस्त देशों में एक ही भाषा का प्रयोग किया जाता तो सभी एक–दूसरे की बात आसानी से समझ लेते, परन्तु प्रत्येक देश में अनेक भाषाएं होती हैं। अगर हम भारत के विषय में सोचें तो भारत में तो हर दो–तीन मील पर भाषा बदल जाती हैं। भारत एक विविधता से भरा देश है और यह विविधता जलवायु, रहन–सहन, खान–पान आदि से हैं। भाषा भी उसमें एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। अब प्रश्न यह खड़ा होता है कि जब इतनी अधिक भाषाएं हैं तो भारत में एकता का प्रसार कैसे हुआ?

इसका साधारण उत्तर है–अनुवाद। अनुवाद ही वो मुख्य रूपरेखा है जिससे हम एक भाषा का रूपांतरण दूसरी भाषा में कर सकते हैं।

अनुवाद में दो भाषाओं की सामग्री होती है। बोलने वाला व्यक्ति जिस भाषा में बात करता है, उसे सुनने वाले व्यक्ति की भाषा में बताना ही अनुवाद है। 'अनुवाद' शब्द दो शब्दाशों के योग से बना है– 'अनु'– पीछे या अनंतर और 'वाद'– कथन या कहना। अंग्रेजी में इसे Translation कहा जाता है। Translation में मूल भाषा के अर्थ को अन्य भाषा में रूपांतरण करने की प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है। 'अनुवाद' शब्द को विभिन्न भारतीय भाषाओं में तर्जुमा, परिभाषा, विवर्तन आदि नाम दिए गए है। 'अनुवाद' सिद्धान्त की सामान्य परिभाषा इस प्रकार है–''अनुवाद मूलभाषा की सामग्री के भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना है।''

अनुवाद की शर्त यह है कि इसमें दो भाषाएं होनी चाहिए। इनमें प्रथम भाषा वही है जिसकी सामग्री का अनुवाद किया जाए। इसे मूल भाषा व स्रोत भाषा भी कहते हैं। द्वितीय भाषा वही है जिसमें सामग्री अनुदित की जाती है। इस द्वितीय भाषा को सामान्यतः लक्ष्य भाषा कहा जाता है। कभी–कभी एक भाषा से दूसरी भाषा में सीधे अनुवाद करने की बजाय दूसरी भाषा में पहले किए अनुवाद का तीसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। फ्रेंच, जर्मन, रूसी आदि भाषाओं से बंगला, हिन्दी में जो अनुवाद होता है, वह अक्सर अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से ही किया जाता है, परन्तु ज्यादा सुविधाजनक सीधा अनुवाद ही होता है। कहीं मूल रचना के शब्द–प्रतिशब्द का अनुवाद किया जाता है। कहीं मूल भाव को आत्मसात करने के बाद उसे अपनी तरफ से नए सिरे से प्रस्तुत किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन सर्वेक्षण यही प्रमाणित करता है कि आज हम अनुवाद के युग में जी रहे हैं। संसार में अनेक भाषाऐं हैं और प्रत्येक भाषा परस्पर अनुवाद करती रहती है। अनुवाद में प्रौद्योगिकी का सहारा लिया जाता रहता है। इसलिए अनुवाद को बीसवीं सदी की देन मानते हैं, परन्तु यह मान्यता गलत है अरबी भाषा का 'तरजुमा'

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

शब्द भी यही अर्थ सूचित करता है। यह अरबी शब्द काफी पुराने जमाने से अनुवाद के चालू रहने की ग्वाही देता है। भारत में भी अनुवाद की प्रवृति अत्यंत प्राचीन रही है। भारत के उपलब्ध साहित्य में सबसे प्राचीन वैदिक वाड.मय है। तर्क की दृष्टि से उसमें भी अनुवाद की संगति है। मगर वेदों के रचनाकार का पता न लग पाने के कारण उन्हें अपौरूषेय मानने से वैदिक वांड.मय में अनुवाद पर कोई प्रमाणिक बात नहीं मिलती।

एक भाषा के एक रूप के कथ्य को दूसरे रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। उदाहरणार्थ – छंद में बताई गई बात को गद्य में उतारना भी अनुवाद है। इसे आधुनिक अनुवाद विशेषज्ञ 'इट्रालिंगुअल ट्रास्लेशन' कहते हैं। अनुवाद की एक प्रवृति है। इसे अंग्रेजी में 'अडाप्टेशन' कहा जाता है। हिन्दी में 'रूपांतरण' कहे या संक्षिप्त भावांतरण। संस्कृत साहित्य के ही युग में यह प्रणाली लोकप्रिय हो चली थी। यह कुछ स्पष्टीकरण मांगता है। इस साहित्य में रामायण, महाभारत और श्रीमदभगवत् सबसे लोकप्रिय ग्रंथ हैं। 19वीं शताब्दी में एक अनुवाद धारा हिन्दी में मिलती है, उर्दू से अनुवाद की। यद्यपि उर्दू मुख्यतः खड़ी बोली से विकसित शैली ही रही तो भी दक्खिन से उत्तर लौटने के बाद उसने अरबी फारसी से अधिक घनिष्टता बना ली। वह एक प्रकार से विदेशी भाषा होती गई। वर्तमान में उर्दू हिन्दी से अलग भाषा साबित होती है। अब हिन्दी साहित्यकार उर्दू से अनुवाद करने लगे। इसका सबसे अच्छा उदाहरण प्रेमचन्द में मिलता है। ज्ञात है कि प्रेमचन्द ने पहले उर्दू में लिखा। उन्होंने अन्य उर्दू कलाकारों की रचनाएं हिन्दी में अनुदित की। यही नहीं, अपने उर्दू ग्रन्थों को दुबारा हिन्दी में लिखा और हिन्दी के लोकप्रिय लेखक बन गए।

वाक्य की संरचना में अनुवाद की भूमिका अहम होती है। वाक्य संरचना की विशेषताएं मौलिक लेखन में उतनी महसूस नहीं होती जितनी की अनुवाद के प्रसंग पर। अनुवाद की चर्चा में हमें अंग्रेजी हिन्दी की अनुवाद पहले स्मरण आ सकता है। जिस प्रकार से वाक्य संरचना अंग्रेजी में होती है, उससे हिन्दी की वाक्य संरचना कुछ भिन्न है। यूरोपीय भाषाओं की वाक्य संरचना से भारतीय भाषाओं की वाक्य संरचना में काफी अंतर होता है। भारतीय भाषाओं की वाक्य संरचना प्रायः समान है। इसलिए एक भारतीय

भाषा की सामग्री दूसरी भारतीय भाषा में अनुदित करना अपेक्षाकृत सरल माना जाता है। परन्तु फिर भी भाषाओं की पारिवारिक विशेषताऐं उनकी वाक्य संरचना में दिखाई देती हैं। उदाहरणार्थ– मलयालम द्रविड़ भाषा है तो हिन्दी आर्य परिवार की भाषा है। यह भी उल्लेखनीय है कि द्रविड भाषा होते हुए भी मलयालम संस्कृत से अत्यंत प्रभावित है।

हिन्दी भाषा के वाक्य में कर्त्ता–कर्म–क्रिया का विन्यास बुनियादी बिन्दु है। यह भारतीय भाषाओं में समान रीति से किया जाता है। जबकि अंग्रेजी में इसका क्रम कुछ बदलता है–

हिन्दी राम (कर्त्ता) दूध (कर्म)पीता है (क्रिया)

अंग्रेजी रामा (कर्त्ता) ड्रिंक्स (कर्म)मिल्क (क्रिया)

कर्म के बाद क्रिया और कर्त्ता के अन्वय की बात आती है। हिन्दी में कुछ अपवादों को छोड़कर सर्वत्र क्रिया कर्त्ता के काल, लिंग व वचन का अनुसरण करती है। तमिल द्रविड़ भाषा है। उसमें क्रिया कर्त्ता के काल, लिंग व वचन का अनुसरण करती है। मलयालम प्रारम्भिक युग में तमिल के समान कर्त्ता के लिंग वचन का अनुसरण करती थी। किन्तु आगे क्रिया शब्दों के लिंग के कारण अंतर करने की प्रवृति समाप्त हो चली। लिंग का ही नहीं, वचन का अंतर भी समाप्त हो गया। यह सरलता मलयालम की अपनी विशेषता है।

हिन्दी	**मलयालम**	
कृष्ण गाता है।	कृष्णन	पाटुन्नु
राधा गाती है।	राध	

'कम्पयूटर' अनुवाद से अभिप्रायः अनुवाद प्रक्रिया के उस चरण से है जिसमें स्रोत भाषिक पाठ के संप्रेष्य अर्थ को कम्पयूटर प्रणाली के जरिए लक्ष्य भाषिक पाठ में रूपांतरित किया जाता है। कम्पयूटर अनुवाद की प्रक्रिया मानव अश्रित मशीनी अनुवाद है, जिसमें अनुवाद की जाने वाली सामग्री को इन्पुट के रूप में कम्पयूटर प्रणाली में डाला जाता है। कम्पयूटर की भीतरी प्रणाली, दोनों भाषाओं के संचित शब्दों, मुहावरों

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

और व्याकरिणक नियमों का उपयोग करते हुए स्वतः उस स्रोत भाषा की सामग्री का दूसरी अर्थात लक्ष्य भाषा में अनुवाद करती है जो आऊटपुट के रूप में प्राप्त होता है।

आज के युग में वैश्वीकरण की चर्चा बहुत है। हमें अपने पूर्वजों पर गर्व है उन्होनें 'वसुधैव कुटंबकम' का संदेश दिया है। वास्तव में विश्व को गांव या कुटुम्ब समझने की संकल्पना को पूरा करने में अन्य बातों के साथ–साथ अनुवाद की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कुछ विद्वानों का मत है कि अनुवाद वास्तव में एक व्याख्या है। राजेटी के अनुसार– ''अनुवाद संभवतः टिप्पणी का सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप है।'' इस मत के समर्थक विद्वान शुद्ध साहित्य के अनुवाद में व्याख्या की क्षमता और सामर्थ्य वाले विद्वान को ही काव्य का अनुवाद करने का अधिकारी मानते हैं।

बाईबल में 'बेवल' का एक प्रसंग आता है कि मानव ने जब शिनार देश में एक अद्भुत नगर और विलक्षण मीनार बनाकर 'यहोवा' से टक्कर लेने की ठानी तो उसने उनकी भाषाओं में भेद उत्पन्न कर दिया, जो उनमें परस्पर द्वेष एवं वैर का कारण बना। बेवल की मीनार के इस मिथक में अनुवाद की आवश्यकता महसूस हुई और कुछ लोगों की ऐसी मान्यता है कि वहीं से अनुवाद का आरम्भ हुआ। यह बात सभी मानते है कि विश्व की तमाम मानव जातियों ने पारस्परिक संप्रेषण के लिए अनुवाद का सहारा लिया होगा चाहे वह सिंकदर और पोरस के बीच का संवाद हो, चीनी यात्रियों और भारतीय मनीषीयों के बीच का संवाद हो, कोलंबस और अमेरिका के आदिवासियों के बीच का संवाद हो, वास्कोडिगामा और दक्षिण भारतीयों के बीच का संवाद हो या फिर आधुनिक विश्व के लोगों के बीच संपर्क का माध्यम हो, अनुवाद सबका साथी रहा है।

आज वैश्वीकरण की चर्चा है। इसके कारण सभी मानव जातियां एक दूसरे के नजदीक आ रही है। एक दूसरे से प्रभावित हो रही है, अपने विचारों का आदान–प्रदान कर रही हैं। अनुवाद की कसौटी विद्वानों ने यह बताई है कि वह मूल जैसा पढा जाए। इसमें जैसा या Like शब्द ध्यान देने योग्य है, क्योकि जैसा या Like को यहाँ पर दो अर्थ हैं, जैसा शब्द से एक तात्पर्य तो यह है कि मूल में जो तथ्य है या जो कथ्य है वह

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सत्यता के साथ अनुवाद में भी आना चाहिए। जैसा शब्द से दूसरा तात्पर्य यह है कि भाषा के प्रवाह की दृष्टि से इसमें ऐसा प्रवाह रहना चाहिए कि ऐसा प्रतीत हो कि मूल रूप से यह लक्ष्य भाषा में लिखा गया हो। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज सापेक्ष होता है और साहित्य तथा अनुवाद का संबंध भी परम्परागत है। सभ्यता के आरम्भ से ही मानव ने अनुवाद का सहारा लिया है। भारतवर्ष में नवजागरण की चेतना को प्रवाहित करने में अनुवादकों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। इसी माध्यम से हम फ्रांसीसी राज्य क्रांति, यूरोपीय उपनिवेशवाद, अमेरिकी पूंजीवाद तथा साम्यवाद जैसी घटनाओं एवं युगांतकारी शक्तियों से परिचित हुए। इन शक्तियों, घटनाओं ने सम्पूर्ण विश्व में सामाजिक परिवर्तन में क्या भूमिका अदा की इस तथ्य से सभी परिचित हैं।

हमारे देश का तो यह सौभाग्य रहा है कि 19वीं शती के दौरान भारतेन्दु युग को प्रायः सभी साहित्यकार अनुवादक भी रहे हैं। लेखन उनके हृदय की धड़कन थी और अनुवाद उनकी प्रेरणा (गार्गी गुप्तः अनुवाद, 1986, पृ0 3)। वास्तव में इस काल के साहित्य का प्रमुख लक्ष्य जनमानस में ऐसा परिवर्तन लाना था जो देश की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त कर सके। इस कार्य हेतु वे अनुवाद और सृजन दोनों का महत्व देते थे। इसी दौरान शेक्सपीयर के नाटकों का काफी बड़ी संख्या में अनुवाद हुआ। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने शेक्सपीयरके नाटक 'मर्चेण्ट ऑफ वेनिस' का हिन्दी में अनुवाद किया। इसी प्रकार चेकोस्लोवाकिया के लेखक वित्सेंत्सलेस्नी ने टैगोर की कृतियों का चेक भाषा में अनुवाद प्रस्तुत करके दोनों देशों की संस्कृतियों को निकट लाने का प्रयास किया जो सफल भी रहा।

निज भाषा में संपूर्ण ज्ञान–विज्ञान की उपलब्धि से ही दीनता का विनाश संभव है। यह अनुवाद से ही संभव है। स्वाधीनता संग्राम के दौरान गीता दर्शन ने संपूर्ण भारतीय जनमानस को एकजुट बनाएं रखा। यह गीता के अनुवाद का ही महत्व है। इसी प्रकार संपूर्ण भारत में 'आसेतु हिमाचलम' की सामाजिक संस्कृति की स्थापना का श्रेय भी बहुत कुछ अनुवाद को देना उचित होगा। कालिदास की अनुदित कृतियों का अध्ययन करके ही जर्मन कवि गेटे ने कालिदास की शकुंतला को संबोधित करके कविता

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

लिखी। यह तथ्य भी मात्र संयोग नहीं है कि प्रायः विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में रोमियो–जूलियट, हीर–रांझा, लैला–मजनू जैसी कथाएं पाई जाती है। ये कथाएं प्रत्यक्षतः अनुवाद के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के मध्य आदान–प्रदान की प्रतीक हैं।

कुछ लोग अनुवाद को पाप, बेवफा–रूपसी, धोखा जैसे नामों से पुकारे जाते हैं। इतने आरोप लगने के बावजूद भी यह कहा जा सकता है कि अनुवाद आधुनिक विश्व की एक आवश्यकता है। इसी कारण आज अनुवाद पर स्वतंत्र विद्या के रूप में विचार किया जा रहा है। ''जो पहले आए सो पाएं'' के प्रतिस्पर्धात्मक युग में यह आवश्यक हो गया है कि विभिन्न भाषाओं में तुरन्त अनुवाद की व्यवस्था उपलब्ध हो। इसलिए अब अनुवाद पर स्वतंत्र विद्या के रूप में विचार किया जा रहा है। अनुवाद में दो भाषाओं की संरचना की समतुल्यता के सिद्धान्त का प्रतिपादन सर्वप्रथम भाषा वैज्ञानिक जे.सी. कैटफोर्ड ने अपनी पुस्तक Linguistic Theory of Translation में किया था।

अनुवाद को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है–

1. उसे मूल पाठ के अर्थ को ठीक–ठाक अंतरित करना है।
2. पाठक को मूल पाठ के संदेश की ताजगी भी संप्रेषित करनी है।

अनुवाद वास्वत में व्याख्या नहीं होती पर आवश्यकता पड़ने पर अनुवादक व्याख्या का सहारा ले सकता है।

सारांश– अंततः अनुवाद एक ऐसी विद्या है जो किसी भाषा के एक रूप के कथ्य को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करके वैश्विक परिवेश में बदल देती है और भाषा का स्वरूप भी वैश्विक प्रवृति का हो जाता है। 21वीं सदी के इस युग में अनुवाद के कारण आज हिन्दी भाषा भी वैश्विक भाषा का रूप ले चुकी है और इसका श्रेय हिन्दी अनुवाद विद्या को जाता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

सन्दर्भ सूची–

- आचार्य रामचन्द्र वर्मा, पुस्तक 'अनुवाद'।
- अनुवाद की व्याख्या पुस्तक।
- अनुवादः 19वीं शताब्दी।
- लेखक राजेटी।
- अनुवाद : वैश्वीकरण।